नाथपन्थ और योगवासिष्ठ

आस्तिक दर्शनों के आलोक में

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

नाथपन्थ और योगवासिष्ठ

आस्तिक दर्शनों के आलोक में

डॉ. सम्पूर्णानन्द तिवारी

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

दिल्ली (भारत)

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

एल–9ए, फर्स्ट फलोर, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
फोन : 9968628081, 9013387535
E-mail : akhandpublishing@yahoo.com,
akhandpublishinghouse@gmail.com
Website : www.akhandbooks.com

नाथपन्थ और योगवासिष्ठ

आस्तिक दर्शनों के आलोक में

संस्करण : 2019

© लेखक

ISBN: 978-93-88998-29-1

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

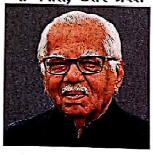
इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव 'अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस' के द्वारा प्रकाशित।

SAMPLE

राम नाईक
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश



सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ - 226 027

9 मई, 2019

शुभेच्छा

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि जनपद देवरिया निवासी डॉ0 सम्पूर्णानन्द तिवारी द्वारा 'नाथपन्थ और योगवसिष्ठः आस्तिक दर्शनों के आलोक में' नामक पुस्तक का लेखन किया गया है।

भारत विभिन्न धर्म एवं संस्कृतियों का महान देश है। यहां के सभी पंथों ने सदैव मानवता के उद्धार एवं उनके कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। मुझे आशा है कि डॉ0 सम्पूर्णानन्द तिवारी की यह पुस्तक निश्चय ही पाठकों के लिये ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होगी।

मैं, डॉ0 तिवारी की पुस्तक की रचना के लिये बधाई देता हूँ और निरन्तर सर्जनारत रहने की कामना करता हूँ।

(राम नाईक)

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल : hgovup@nic.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

SAMPLE

नमूना • SAMPLE

आमुख

नाथ पन्थ का उदय भारतीय धार्मिक–सामाजिक परिदृश्य की एक युगान्तरकारी घटना है। भारतीय समाज में जिस समय कर्मकाण्ड–जाति प्रथा, बलि प्रथा, बलि प्रथा इत्यादि का अत्यधिक प्रचलन था, उसी समय नाथ पन्थ लोकमंगल की भावना के साथ भ्रमित जन को एक सुनिश्चित योग दिशा प्रदान करने के लिए प्रकट हुआ। गुरू गोरक्षनाथ ने कर्मकाण्ड, तीर्थाटन, यज्ञ, उपवास, व्रत इत्यादि प्रंपचों को व्यर्थ बताया और सहजता पर बल देते हुए सहज साधना योग का उपदेश दिया।

डॉ. सम्पूर्णानन्द तिवारी ने अपने इस पुस्तक ''नाथपन्थ और योगवासिष्ठ : आस्तिक दर्शनों के आलोक में'', में वस्तुतः यह प्रतिपादित करने का सराहनीय प्रयास किया है कि नाथ पन्थ के मूलभूत सिद्धान्त वैदिक परम्परा से ही उद्‌भूत हैं। यह नितान्त नवीन संकल्पना नहीं है। आस्तिक भारतीय दर्शनों में जो प्रकृति, पुरूष, शिव, चित्ति, और हठयोग इत्यादि विषय हैं वे ही सहज रूप में नाथ पन्थ में वर्णित हैं कहने का अभिप्राय है कि नाथ पन्थ अपने सिद्धान्तों का स्रोत भारतीय सनातन दार्शनिक प्रणाली से ही प्राप्त करता है किन्तु उसमें युगानुकूल संशोधन करके लोकहित में मानवता के कल्याणार्थ प्रस्तुत करता है।''

डॉ. तिवारी ने अपने इस पुस्तक में अखाड़ों का इतिहास बताते हुए अखाड़ों की भारतीय दार्शनिक–धार्मिक परम्परा की रक्षा के लिए किए जाने वाले सतत् प्रयासों को भी वर्णित किया है।

हमें आशा और पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक सुधीजनों को नाथ पन्थ और योग वासिष्ठ के दार्शनिक पृष्ठभूमि से परिचित कराते हुए

उनकी धर्म और दर्शन में अभिरूचि के संरक्षण एवं संवर्द्धन में सहायक सिद्ध होगी।



डॉ. चन्द्रशेखर सिंह,
आई.ए.एस.

नमूना • SAMPLE

भूमिका

''धर्मो रक्षति रक्षितः'' ''स्वधर्मे निधनं श्रेयं पर धर्मो भयावहः'' यतो धर्मस्ततो जयः'' इत्यादि आर्ष वाक्य भारतीय चिन्तन परम्परा में 'धर्म' के विशद्, व्यापक और वैविध्यपूर्ण महत्व को प्रदर्शित करते हैं। भारतीय दर्शन में धर्म निरा आदर्श या कर्मकाण्ड का द्योतक नहीं हैं यह जीवन के नैतिक मूल्य और स्वकर्त्तव्य पालन से सम्बद्ध है। मध्य युग में जब तत्कालीन पाखण्डियों ने 'धर्म' के स्वरूप को विद्रूप कर दिया था उसी समय जब भारतीय जनमानस को किसी सिद्ध–लोकनायक की आवश्यकता थी जो पाखण्डियों, वामाचार साधनाओं से मुक्ति दिलाकर लोक में नैतिकता, सदाचार और सात्विक साधना की परम्परा की प्रतिष्ठापना करे। तभी इसी हेतु नाथ सम्प्रदाय का उद्भव हुआ।

गोरखपुर के अपने प्रवास के क्रम में मुझें नाथ पन्थ के प्रमुख सिद्ध पीठ गोरक्षनाथपीठ का सम्पर्क प्राप्त हुआ। नाथ पन्थ के कुछ विचारों और पुस्तकों को देखनें के बाद ऐसा प्रतीत हुआ कि नाथ सम्प्रदाय के विचार योगवासिष्ठ के विचारों से अत्यधिक साम्य रखते है' फिर मैंनें जब इस पर शोध किया तो पाया कि हठयोग, चित्त, चित्ति, कैवल्य, पुरूष, शिव, इत्यादि की अवधारणा पूर्णतः योगवासिष्ठ से साम्य भले न रखते हों किन्तु आस्तिक भारतीय दर्शनों में यत्र–तत्र उपलब्ध अवश्य दिखाई देते हैं। वस्तुतः नाथ पन्थ भारतीय दार्शनिक चिन्तन परम्परा के विकास का ही रूप हैं सन्तों और योगियों द्वारा इस पन्थ को लोकहित में जन कल्याणार्थ प्रवर्तित किया गया। हमारे देश में सम्राट भी दाशनिकों को

नमन करते थे और शास्त्रार्थ के माध्यम से दार्शनिक विचारों को सत्यता तक पहुँचाने में रूचि लेते थे। गार्गी–याज्ञवल्क्य संवाद (बृहदारण्यक उपनिषद) का उदाहरण द्रष्टव्य हैं। उल्लेखनीय है कि प्राचीन भारतीय दार्शनिक सम्प्रदाय, चाहे वह सांख्य–योग, न्याय–वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त दर्शन हो, सभी के संस्थापक महर्षि थें जिन्होंने कठोर तपस्या के द्वारा दार्शनिक सत्यों की उपलब्धि की थी और उसे उनके शिष्यों ने भी उतनी ही तपस्या, लगन और साधना के द्वारा ग्रहण कर सम्प्रदाय के रूप में आगें बढ़ाया, जिसका विशाल भण्डार आज हमारे समक्ष उपलब्ध है।

नाथपन्थ भी उसी ऋषि परम्परा का प्रतिफल है इसीलिए इसमें भी लगभग सभी तत्त्व विद्यमान हैं जो आस्तिक दर्शनों में उपलब्ध थे। नाथपन्थ पूर्ववर्ती सभी वैदिक–अवैदिक, निगमागम् परम्पराओं में विकसित योगिक एवं तान्त्रिक विचारधाराओं का समन्वित और परिष्कृत रूप है।

सृजन एकाकी नहीं होता, यह सहयोग से ही संभव होता है, यह पुस्तक एक सृजन ही है जिसमें बहुत महानुभावों का सहयोग सम्मिलित है। यह पुस्तक मेरे परम्पूज्य पिता जी और परमादरणीया माता जी के अमोघ आशीर्वाद और सतत् प्रेरणा का पल्लवित रूप है। गुरूवर श्री प्रो0 रमाशंकर मिश्र (पूर्व विभागाध्यक्ष संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय) को उनकी प्रेरणा और आशीर्वाद के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। मेरे परिवार के मेरे अग्रजों का प्रेरणापरक सहयोग रहा। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती सीमा त्रिपाठी ने कभी प्रेरक के रूप में तो कभी सहायक के रूप में घण्टों साथ बैठकर लेखन कार्य सम्पन्न कराया जिसके लिए उन्हें धन्यवाद देता हूँ। मेरे मित्रगण जैंसे श्री अजय मिश्र (ए0आर0टी0ओ0), डॉ0 जितेन्द्र यादव (असिस्टेन्ट प्रोफेसर दर्शनशास्त्र) का भी उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा कर्त्तव्य है।

मित्र डॉ0 ब्रह्मदेव राम तिवारी (आई0ए0एस0) का विशेष रूप से धन्यवाद हैं कि उन्होंने अपने संस्कृत ज्ञान का परिचय देते हुए मुझे कई सुझाव दिए जो पुस्तक के लेखन में अत्यन्त अनिवार्य थे। विज्ञ पाठ्क

ही पुस्तक की समीक्षा करने में सक्षम हैं उनके सुझावों का हार्दिक स्वागत् करूंगा।

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

विषय सूची

	शुभेच्छा	*v*
	आमुख	*vii*
	भूमिका	*ix*
	ग्रन्थ परिचय	*xv*
1.	केन्द्र में वेदान्त	1
2.	सांख्य–योग दर्शन की पृष्ठभूमि	21
3.	कश्मीर शैव दर्शन की दीप्ति	47
4.	नाथपन्थ और सदाचरण तथा गुरू महात्म्य	60
5.	नाथ पन्थ और अखाड़े	66
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	*81*

नमूना SAMPLE

नमूना • SAMPLE

ग्रन्थ परिचय

नाथ सम्प्रदाय स्वयं को दर्शन के तर्को से दूर रखने का प्रयास किया ठीक उसी प्रकार से छठी सदी ई0 पूर्व में बुद्ध ने अत्याकृत प्रश्नों के माध्यम से ब्रह्म जगत् इत्यादि से सम्बन्धित विषयों से स्वयं को दूर रखा।

यही कारण है कि नाथ सम्प्रदाय के ख्यातिलब्ध लेखकों के प्रसिद्ध और प्रामाणिक ग्रन्थों में भी सापेक्षिक दृष्टि से दार्शनिक सिद्धान्तों का उलझाव उपलब्ध नहीं है। किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि उनके विचार या सिद्धान्त दर्शन से एक दम अछुते थे या तर्क के धरातल पर दृढ़ता से टिके नहीं थे। वस्तुतः नाथ सम्प्रदाय की सम्पूर्ण योग साधना के मूल में उनके दार्शनिक आधार सदैव विद्यमान है।

नाथ सम्प्रदाय के आरम्भ को दर्शाना या बताना एक आरम्भ को दर्शाना या बताना एक अत्यन्त कठिन कार्य है। 'नाथ' शब्द की व्युत्पत्ति इसके मूल 'नाथ' में 'अ' प्रत्यय लगाकर होती है। इस शब्द में कई भिन्न–भिन्न अर्थ, जैसे– ऐश्वर्य, आशीर्वाद, याचना आदि मिलते हैं। द्रष्टव्य है कि कोष ग्रन्थों में 'नाथ' शब्द का अर्थ साधारणतया प्रभु, अधिपति, कर्ता, रक्षक के रूप में ही उल्लिखित मिलता है। ऋग्वेद के एक प्रसिद्ध सूक्त में 'नाथ' शब्द का प्रयोग समर्थ एवं सक्षम के अर्थ में किया गया है। वहीं एक अन्य स्थान पर इस शब्द का प्रयोग 'आश्रम ग्रहण करने योग्य स्थान' के लिए प्रयुक्त हुआ है कि उनके द्वरा सूचित किए जाने वाले महापुरूष वस्तुतः 'स्वानुभूति वेद सत्य' के प्रति आस्था रखने वाले थे। अथर्ववेद में नार्थित एवं 'नाथ' शब्दों का उल्लेख कई बार

SAMPLE

हुआ है। टीकाकार मुनिदत्त ने 'नाथ' शब्द को सदगुरू के अर्थ में ग्रहण किया है।

नाथ सम्प्रदाय की प्राचीनता के संदर्भ में कई इतिहासकारों ने अनेक शोध किया है। पाश्चात्य इतिहासकार ब्रिग्स को 971 ई0 का एक लेख उत्तर भारत के एक मन्दिर प्राप्त हुआ है और इसी आधार पर उनका कहना है कि वो मंदिर नाथ सम्प्रदाय का ही रहा होगा। सातवीं सदी में हवेसांग के यात्रा विवरण मे भी नाथ सम्प्रदाय की चर्चा आती है। यूरोप के एक प्रसिद्ध विद्वान टेसीटरी का मत है कि कनफटा योगी (नाथ योगी) लोग बौद्ध मत के प्रारम्भिक समय में भी विद्यमान थे। नाथ सम्प्रदाय के लोग कुंडल धारण करते है। यह प्राचीन काल से ही नाथ साधुओं की प्रचलित प्रथा रही है आठवीं शताब्दी की एलोरा और एलीफेंटा गुफाओं में शिव की ऐसी अनेक योग मूर्तियाँ है। जिनके कानों में बड़े–बड़े कुंडल बनाए गए है। तमिलनाडु के उत्तरी अर्काट जिले में परशुरामेश्वर के अंदर स्थापित शिवलिंग पर शिव जी की एक मूर्ति है। जिनके कानों में नाथ सम्प्रदाय के योगियों जैसे ही कुंडल है। विद्वानों का मत है कि यह तीसरी शताब्दी ई0 का है।

नाथ सम्प्रदाय के लोग गोरक्षनाथ को अनादि और सर्वव्यापी मानकर काल निर्धारण के बिन्दु पर कोई निर्णय ही नही देते है। इन्हें शिव का अवतार मानते हैं। विविध युगों में और विविध स्थानों में इनके जन्म की बात भी करते है। गोरखपुर के गोरक्षनाथ पीठ परिसर में लेटे हुए भीम की प्रस्तर प्रतिमा है, जिसके सम्बन्ध के किंवदन्ती है कि द्वापर में भीम गोरक्षनाथ का दर्शन करने के लिए आए थे और इसी स्थान पर कुछ समय के लिए विश्राम किये थे। अतः नाथ पंथियो का यह कहना कि गोरक्षनाथ अनादि ब्रम्ह रूप शिव स्वरूप तथा अवतारी हैं तो यह सत्य ही है।

नाथ सम्प्रदाय के मूल के अन्वेषण में उसकी साधना पद्धति और उसका दर्शन महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। नाथ सम्प्रदाय में योग का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। नाथ सम्प्रदाय की चिन्तन पद्धति एंव साधना प्रणाली पारम्पारिक योग प्रणाली से किंचित भिन्न है। नाथ योग

में शिव–शक्ति की जो परिकल्पना है वह स्वयं ही यह प्रमाणित करती है कि नाथ सम्प्रदाय अत्यन्त ही प्राचीन है। भारतीय चिन्तन परम्परा में सृष्टि के आरम्भ में शिव शक्ति की परिकल्पना ही मूल है। शिव और शक्ति एक ही अद्वैत तत्व के विविध रूप है। यही नाथ योग का मूल सिद्धान्त है।

औपनिषदिक चिन्तन धारा में नाथ सम्प्रदाय की साधना पद्धति के लक्षण दिखाई देते है। ऋग्वेद के व्रात्ययोगी रूद्र की उपासना करते थे तथा प्राणायाम आदि यौगिक क्रियाओं को विशिष्ट महत्व देते थे। ऋग्वेद कालीन समाज मे ही यह विश्वास जड़ हो चुका था कि व्यवस्थित जगत की सारी प्रक्रिया व्यवस्थित संचालित एवं नियमित करने वाली कोई अलक्ष्य परोक्ष शक्ति (योग) अवश्य है। योग साधना के लिए चित्त की निर्मलता का विधान अत्यन्त व्यवस्थित रूप में प्राप्त होता है। उपनिषदों के और गीता में भी यह मत स्वीकार किया गया है और इसी आधार पर नाथ योग को औपनिषदिक काल तक रेखांकित किया जा सकता है। कठोपनिषद में भी यह गया है कि इंन्द्रियाँ मन और बुद्धि की स्थिर धारणा ही योग है। योग सूत्र में कहा गया है कि– ''योगः चित्तवृत्ति निरोधः''।

नाथ पंथ में जिस प्रकार शिव और शक्ति के स्वरूप का निर्वचन किया गया है लगभग उसी रूप में वेदान्त दर्शन में ब्रह्म और माया का सांख्य दर्शन में प्रकृति और पुरूष का विशिष्टाद्वैत दर्शन में नारायण और लक्ष्मी के स्वरूप का निर्वचन हुआ है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि परम तत्व के स्वरूप जगत् के साथ उसका सम्बन्ध और परम तत्व को प्राप्त करने के साधन जिस प्रकार उपनिषदों में वर्णित है ठीक उसी प्रकार नाथ योगियों के चिन्तन परम्परा में भी स्वीकृत है।

महाभारत के अर्जुन को पशुपति अस्त्र की प्राप्ति तपस्या और योग बल से हुई थी। विभिन्न शास्त्रों में व्रतकर्ता की परिस्थिति एवं उद्देश्यों के आधार पर इस व्रत की अवधि बारह दिन से लेकर बारह वर्ष तक भी होती थी। नाथ सम्प्रदाय की मान्य और प्रामाणिक रचना 'योगी

सम्प्रदाय विकृति' मे योगी साधक प्रायः बारह वर्ष की अवधि पर्यन्त साधनारत रहा करते थे। शिव पुराण वायवीय संहिता के 9वें अध्याय के अनुसार भगवान शिव के 28 अवतार योगाचार्य के रूप में मिलते है। ये सभी सिद्धनाथ है। इनका शरीर भस्म से विभूषित है। ये प्राणायाम साधना में तत्पर रहने वाले हैं। ये सिद्ध सम्पूर्ण शास्त्रों के तत्वज्ञ, शिवज्ञान परायण, आसक्ति एंव द्वेषरहित, क्रोधशून्य, जितेन्द्रिय एवं सर्व हितकारी है। पशुपति शैवों के साथ नाथ पन्थी साधना की एकता मिलती है। नाथ पन्थी साधक शिव या आदिनाथ के उपासक हैं।

गुजरात के काठियावाड़ जिले में स्थित विश्व प्रसिद्ध सोमनाथ मन्दिर से एक विशाल शिलालिपि, जो कि सम्भवतः 1278 ई0 की है, प्राप्त हुई है। सम्प्रति यह शिलालिपि, जो कि आज यूरोप में है तथा अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने इसका अध्ययन एवं विश्लेषण किया है। डॉ0 बूलर के अनुसार इस लिपि में लिखा गया है ''पशुपत सम्प्रदाय के प्रर्वतक लंकुलीश स्वयं शिवावतार है।'' हेमवती अभिलेख तथ मैसूर से प्राप्त बेलगाम अभिलेख में भी इस तथ्य का उल्लेख मिलता है। कालान्तर में गोरक्षनाथ लंकुलीश के अवतार मान गये। इस प्रकार पूर्वकाल के भागवतों द्वारा घोषित लवलीश पाशुपत सम्प्रदाय भी परवर्ती नाथ सम्प्रदाय में अन्तर्भुक्त हो गया। नाथ सम्प्रदाय का सम्बन्ध कश्मीरी शैवमत रसेश्वर सम्प्रदाय एवं कापलिको से भी न्यूनाधिक रूप में सिद्ध हो जाता है। कश्मीरी शैव आचार्य अभिनव गुप्त ने 'मच्छन्द विभु' नामक ग्रन्थ लिख जो मस्स्येन्द्रनाथ से सम्बन्धित है स्वयं गोरखनाथ द्वारा रचित ग्रन्थ महार्थमंजरी भी कश्मीरी अपभ्रंश में मिला है। डॉ0 शशिभूषण दास गुप्त ने नाथ पन्थ को रसेश्वर सम्प्रदाय का विकसित रूप बताया है। कापालिक सम्प्रदाय शैव सम्प्रदाय में वाममार्गी है। उसे संशुद्ध कर गोरखनाथ ने पूर्व सम्प्रदाय के रूप में अन्तर्भुक्त होने की स्वीकृति दी। कापलिको का मत षटचक्र और नाड़िका निचय के कायायोग से सम्बद्ध था। यही कायायोग नाथपंथियो की अपनी विशेषता है। नाथपंन्थी हठयोग ग्रंथ 'घेरण्ड संहिता' मे योग की शिक्षा चण्ड नामक कापलिक को दी गयी है। शरबतंत्र में 24 कापालिको की जो सूची मिलती है, उनमें से कई नाम बज्रयानी तथा नाथों की सूची में भी मिलते है। शाक्त मत

के भी नाथ मत के कुछ बीज तत्व दृष्टिगोचर होते है। शाक्त मत मूलतः तंत्रानुसारी है, उसके उपदेष्टा 'नाथ' ही है। शाक्तों में कौल मार्ग को श्रेष्ठ बताया गया है। कौल मार्ग को अवधूत मार्ग भी कहा गया है। त्रिपुरा मत के तांत्रिक आचार्य स्वयं को नाथ मतानुयायी कहते है। गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह के अनुसार नाथ मार्ग यद्यपि योग साधनापरक है, तथापि कौल, कपालिक आदि मार्ग नाथ पन्थ द्वार ही प्रकटीकृत है। कन्थड़ी नामक एक सिद्ध के साथ गोरक्षनाथ का संबंध बताया जाता है। प्रबंध चिन्तामणि में एक कथा आती है कि चौलुक्य राजा मूलराज ने एक मूलेश्वर नाम का शिव मंदिर बनवाया था। सोमनाथ ने राजा के नित्य नियत बंदन–पूजन से संतुष्ट होकर अरणहिल्लपुर में अवतीरर्ण होने की इच्छा प्रकट की। फलस्वरूप राजाने वहां त्रिपुरूपप्रसाद नामक मंदिर बनवाया। उसका प्रबंधक होने के लिये राजा ने कथड़ी नामक शैवसिद्ध से प्रार्थना की। जिस समय राजा उस सिद्ध से मिलने गये उस समय सिद्ध को बुखार था, पर अपने बुखार को उसने कथा में संक्रमित कर दिया। कथा कांपने लगी। राजा ने कारण पूछा तो उसने बताया कि उसी ने कथा में ज्वर संक्रमित कर दिया है। बड़े छल–बल से उस निस्पृह तपस्वी को राजा ने मंदिर का प्रबंधक बनवाया। कहानी के सिद्ध के सभी लक्षण नाथपंथी योगी में है। इस लिये यह कंथड़ी निश्चय ही गोरखनाथ के शिष्य ही होगें। प्रबंध चिन्तामणि की सभी प्रतियों में लिखा है कि भूतराज ने संवत् 993 की आषाढ़ पूर्णिमा को राज्य भार ग्रहण किया था। केवल एक प्रति में 77 संवत् है। इस हिसाब से जो काल अनुमान किया जा सकता है, वह पूर्ववर्ती प्रमाणों से निर्धारित तिथि के अनुकूल ही है। ये ही गोरक्षनाथ और मत्स्येंद्रनाथ का काल निश्चय करने के ऐतिहासिक या अर्द्ध ऐतिहासिक आधार है। परन्तु प्रायः दन्तकथाओं और साम्प्रदायिक परंपराओं के आधार पर भी काल–निर्णय का प्रयत्न किया जाता है। इन दन्तकथाओं से सम्बद्ध ऐतिहासिक व्यक्तियों का काल बहुत समय से जाना हुआ रहता है। बहुत से ऐतिहासिक व्यक्ति गोरक्षनाथ के साक्षात शिष्य माने जाते हैं। उनके समय की सहायता से भी गोरक्षनाथ के समय का अनुमान किया जा सकता है। ब्रिग्स ने इन दन्तकथाओं पर आधारित काल को चार मोटे

विभागों में इस प्रकार बांट लिया हैः–

1. कबीर, नानक आदि के साथ गोरक्षनाथ का संवाद हुआ था, इस पर दन्तकथाएँ भी है और पुस्तकें भी लिखी गई है। यदि इन पर से गोरक्षनाथ का काल निर्णय किया जाय, जैसा की बहुत से पंडितों ने किया भी है, तो चौदहवीं शताब्दी के ईशान पूर्व या मध्य में होगा गूगा की कहानी, पश्चिमी नाथों की अनु श्रुतियाँ, बंगाल की शैवपरम्परा और धर्मपूजा का संप्रदाय, दक्षिण के पुरातत्व के प्रमाण, ज्ञानेश्वर की परंपरा आदि को प्रमाण माना जाय तो यह काल 100 ई0 के आस–पास ही जाता है। तेरहवीं शताब्दी में गोरखपुर का मठ ढहा दिया गया था, इसका ऐतिहासिक साक्ष्य है। इसलिये निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि गोरक्षनाथ 1200 ई0 के पहले हुए थे। इस काल के कम से कम एक सौ वर्ष पहले तो यह काल होना ही चाहिए नेपाल के शैव बौद्ध परंपरा के नरेन्द्र देव, उदयपुर के बाप्पा रावल, उत्तर पश्चिम के रसालू, नेपाल के पूर्व में शंकराचार्य से भेंट आदि पर आधारित काल 8वीं शताब्दी से लेकर नवीं शताब्दी तक के काल का निर्देश करते है। कुछ परंपराएं इससे भी पूर्ववर्ती तिथि की ओर संकेत करती हैं ब्रिग्स दूसरे नंबर के प्रमाणों पर आधारित काल को उचित काल समझते हैं, पर साथ ही यह स्वीकार करते है कि यह अंतिम निर्णय नहीं है। जब तक और कोई प्रमाण नही मिल जाता तब तक वे गोरक्षनाथ के विषय में इतना ही कह सकते हैं कि गोरक्षनाथ 1200 ई0 से पूर्व, संभवतः ग्याहरवीं शताब्दी के आरंभ में पूर्वी बंगाल में प्रादुर्भूत हुए थे। हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार नाथ मार्ग के आदि प्रवर्तकों का समय नवीं शताब्दी का मध्य भाग ही उचित जान पड़ता है।

गुरू मत्स्येंद्रनाथ जिस कदली देश या स्त्रीदेश में नये आचार में जा फंसे थे, वह कहाँ है? मीन चेतन और गोरक्ष विजय में उसका नाम कदली देश बताया, गया है और योगिसं प्रदाया विकृति में 'त्रियादेश' अर्थात् सिहल द्वीप कहा गया है। सिंहल देश ग्रंथकार की व्याख्या है। भारतवर्ष में स्त्रीदेश नामक एक स्त्रीप्रधान देश की ख्याति बहुत पुराने जमाने से है। नाना स्थानों के रूप में इसे पहचानने की कोशिश की गई है। हिमालय के पार्वत्य अंचल में ब्रह्मापुर के उत्तरी प्रदेश को जो वर्तमान

गढ़वाल और कुमायूँ के अन्तर्गत पड़ता है, पुराना स्त्रीराज्य बताया गया है। सातवीं शताब्दी में इसे 'सुर्वण गोत्र' कहते थे हवेनसांग ने सतलज के उद्‌गम स्थान के पास किसी स्त्रीराज्य को पाया था। आटकिन्सन के 'हिमालय न डिस्ट्रिक्ट' से भी यह तथ्य प्रमाणित हुआ है किसी पंडित ने कामरूप को ही स्त्रीदेश कहा है। यह लक्ष्य करने की बात है कि गोरक्ष विजय में स्त्रीदेश न कह कर कद देश कहा गया है महाभारत में कदल धन की चर्चा है (वन पर्व 146 अ0) कहते है कि इस कदलो देश में अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, और परशुराम ये सात चिरंजीवी सदा निवास करते हैं। हनुमान जी ने भीमसेन से कहा था कि इसके बाद दुरारोह पर्वत है जहां सिद्ध लोग ही जा सकते है, मनुष्य की गति वहां नहीं है (वनश्व 146, 13) पं0 सुधाकर द्विवेदी नें लिखा है कि देहरादून से लेकर ऋषिकेश बद्धिकाश्रम और उसके उत्तर के हिमालय प्रान्त सब कदली वन कहे जाते हैं। इन सब बातों से प्रमाणित होता है कि यह हिमालय के पाददेश में व्यवस्थित कुमायूँ गढ़वाल के अंदर पड़ने वाला प्रदेश है। एक और विचार यह है कि स्त्रीदेश कामरूप ही है। काम सूत्र की जय मंगला टीका में लिखा है कि वज्रावतंस देश के पश्चिम में स्त्री राज्य है। पं0 तनसुखराम ने नागरसर्वस्व नामक बौद्ध काम शास्त्रीय ग्रन्थ की टिप्पणी में लिखा है कि यह स्थान भूतस्थान अर्थात् भूटान के पास कही है। इस पर से भी यह अनुमान पुष्ट होता है कि कदली देश असम के उत्तरी इलाके में है। तंत्रलोक की टीका और कौल ज्ञान निर्णय से यह स्पष्ट है कि मत्स्येन्द्रनाथ ने कामरूप में हो कौल साधना की थी। इसलिये कदलीबन या स्त्रीदेश से वस्तुतः कामरूप ही उद्‌दिष्ट है। कुलूत, सुवर्ण गोत्र, भूतस्थान, कामरूप में भिन्न–भिन्न ग्रंथकारों के स्त्रीराज्य का पता बताना यह साबित करता है कि किसी समय हिमालय के पार्वत्य अंचल में पश्चिम से पूर्व तक एक विशाल प्रदेश ऐसा था जहां स्त्रियों की प्रधानता थी। अब भी यह बात उत्तर भारत की तुलना में, बहुत हद तक ठीक है।

इन सारे वक्तव्यों का निष्कर्ष यह है कि मत्स्येन्द्रनाथ चंद्रगिरी नामक स्थान में पैदा हुए थे जो कामरूप से बहुत दूर नहीं था और या तो बंगाल के समुद्री किनारे पर कहीं था, या जैसा कि तिब्बती परम्परा

से स्पष्ट है, ब्रह्मपुत्र से घिरे हुए किसी द्वीपाकार भूमि पर व्यवस्थित था। इतना निश्चित है कि स्थान पूर्वी भारतवर्ष में कामरूप के पास कहीं था। इनका प्रादुर्भाव नवीं शताब्दी में किसी समय हुआ था। शुरू–शुरू में वह एक प्रकार की साधना का व्रत ले चुके थे, परन्तु बाद में किसी ऐसे आचार में जा फंसे थे जिसमें स्त्रियों का साहचर्य प्रधान था और यह आचार ब्रह्मचर्यमय जीवन का परिपालक था। वे जिस स्थान में इस प्रकार के नये आचार में ब्रती हुए थे वह स्थान स्त्रीदेश या कदलीदेश था जो कामरूप ही हो सकता है। इस मायाजाल से उनका उद्धार उन्हीं के प्रधान शिष्य गोरक्षनाथ ने किया और एक बार वे फिर अपने पुराने मार्ग पर आ गए। अपने ही गुरू को जाग्रत करने के कारण गुरू गोरक्षनाथ की यह उक्ति सर्व प्रचलित हो गयी ''जाग मचछन्दर गारेष आया''।

नाथ सम्प्रदाय का उदय यौगिक क्रियाओं के उद्धार के लिए हुआ था। जब तान्त्रिकों और सिद्धों के चमत्कार एवं अभिचार बदनाम हो गये, मद्य माँस आदि के लिए तथा सिद्ध, तान्त्रिक आदि स्त्री सम्बन्धी आचारों के कारण घृणा की दृष्टि से देखे जाने लगे तथा जब इनकी यौगिक क्रियाएँ भी मन्द पड़ने लगी, तब नाथ सम्प्रदाय का उदय हुआ।

यह सम्प्रदाय आदिनाथ भगवान शंकर द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय है और सर्वप्रथम उनके नाम के साथ यह पद प्रयुक्त हुआ है।

इस सम्प्रदाय को नाथ सम्पद्राय की संज्ञा से प्रसिद्ध होने से पूर्व इसे सिद्धमत, सिद्धमार्ग, योगमार्ग, योगी सम्प्रदाय, अवधूत मत, अवधूत सम्प्रदाय, कापालिक आदि नामों से जाना जाता रहा है और आज भी ये नाम प्रचलन में हैं इनमें से कापालिक संज्ञा के स्थान पर कहीं–कहीं अघोर पद का प्रयोग किया जाता है किन्तु इनमें सर्वाधिक प्रयोग होने वाले पद नाथ और योगी ही है।

नाथपन्थी योगी अलख (अलक्ष) जगाते है। इसी शब्द से ईष्टदेव का ध्यान करते हैं। इन मन्त्रों का लक्ष्य वही प्रणवरूपी परम पुरूष है, जो वेदों और उपनिषदों का ध्येय है। नाथपन्थी जिन ग्रन्थों को प्रमाण मानते हैं, उनमें सबसे प्राचीन हठयोग संबंधी ग्रन्थ 'घेरण्डसंहिता' और 'शिवसंहिता'